कोई–2 मित्र–सम्बंधियों की भी सर्विस करते हैं। यह भी अच्छा है। उन बेचारों को पूरी पहचान नहीं है कि बाबा से हमको बेहद का वर्सा मिलेगा। सो पूरा ज्ञान नहीं है। भल शिवबाबा को याद करते हैं; परंतु यह नहीं जानते हैं कि उनसे हमको वर्सा मिलना है। उनको इतनी खुशी नहीं हो सकती जितनी कि याद दिलाने वाले को होगी और खुशी भी तब हो जबकि योग में रहे और दूसरों का भी कल्याण करें। नम्बरवार हैं। सिर्फ यह हडी समझाना है कि ऊँच ते ऊँच भगवान है। उनकी ही याद अव्यभिचारी याद है। वो पतित–पावन है। उनकी याद से पाप नाश होंगे। और तो कोई पतित–पावन है नहीं। ऊँच ते ऊँच बेहद का बाप ही है। यह ज्ञान तुम बच्चों को ही है। वो तो जानते ही नहीं हैं। बाप आते हैं तो ज़रूर वर्सा देते हैं 21 जन्मों का। फिर आवेंगे तब जबकि वर्सा देना होगा। बेहद के बाप से वर्सा एक ही बार मिलता है। लौकिक बाप से तो हर जन्म में मिलता है। सर्विस करने की युक्तियाँ बहुत हैं। त्रिमूर्ति शिव का बैज भी पड़ा हुआ होगा तो कोई भी आकर पूछेगा। या तो पॉकेट से निकालकर दिखाकर समझाना चाहिए। लिटरेचर हाथ में दे देना चाहिए। वैसे भी लोग लिटरेचर देते रहते हैं। गीता का भगवान वाला जो लिखते हैं वो भी अच्छा है। समझाने का बहुत सहज है। बाप रचता एक ही है। यह सृष्टि का चक्र फिरता है। यह तो बहुत सहज है समझाने का। सतयुग वो ही होगा फिर संगमयुग वो ही है ना। उसमें फर्क कब पड़ नहीं सकता है। ड्रामा हूबहू चलता रहता है। बच्चों को खुशी होनी चाहिए कि हमको शिवबाबा ने एडॉप्ट किया है। उनसे ऊँच कुछ है नहीं। पहचाना और सतयुग में आने लायक बना। बाकी है मेहनत पर। सो तो सर्विस से पता पड़ता है। आगे चलकर जास्ती पता पड़ जावेगा। सर्विस में भी रहना पड़ता है। बच्चे अगर योगयुक्त होकर समझाते हैं तो बहुतों को कशिश हो सकती है। बहुतों का कल्याण हो सकता है। योग कम है। डिफीकल्ट है। सेकेंड में जीवनमुक्ति यह अक्षर राइट है। निश्चय होवन्ति और फिर तो मुक्ति–जीवनमुक्ति पावन्ति। ज्ञान का विनाश नहीं होता है। जीवनमुक्ति तो पा लेंगे। चंडाल का पद पाना भी जीवनमुक्ति पना भी तो है ना। सतयुग है ही जीवन मुक्तिधाम। यह है जीवनबंधधाम। अपने को निश्चय में रखना खुशी में लाना है। सिर्फ यह समझो कि भगवान हमको पढ़ाते हैं। वो बाप, टीचर, सतगुरू है। वो ही बाप, टीचर, सतगुरू है। यह याद रहे तो भी अहो सौभाग्य। समय तो बहुत मिलता है। ड्रामा में युक्ति रखी हुई है। कितना भी देरी से आवे तो भी बहुत पुरुषार्थ कर ऊँच पद पा सकते हैं। बाकी माया बहुत प्रबल है। बुद्धि को कहाँ ना कहाँ घुसा देती है। ओम।

24–3–67 बाबा के पत्र की कॉपी– हैल्लो कलकत्ता निवासी शेर और शेरनियों प्रति बापदादा का यादप्यार और देखो कि बादल कितनी जोर से वर्षा कर रहे हैं। क्या ज्ञान सागर के बच्चे ऐसे–2 गजगोर कर कलत्ते गांव को बगीचा फूलों का नहीं बना सकते हो? बुटैनिकल बड़ा गार्डन ना बनाया है तो बागवान कैसे आवे? भक्तिमार्ग के कीचड़ में कैसे गले तक फंसे पड़े हैं। कहाँ तो उस विकारी दुब्बड़ से निकालने वाले खुद भी फँस जाते हैं। पवित्रता के जैसे कि दुश्मन हो जाते हैं। अपवित्रता ही खुराक बन गई है अपवित्रों की। पुकारते रहते हैं, अब फिर सहज रास्ता भी बताते रहते हैं; परंतु हाय तकदीर। ईश्वरीय तदबीर भी पसंद नहीं आती है। बस, हरी बोल, हरी बोल मरते–2 भी चिल्लाते रहते हैं। तोबा–2। एक तो रावण का जेल, दूसरा साधु समाज का जेल, फिर भक्ति का जेल। भारत को सतयुग डबल सिरताज आकर बनाने फिर से आकर समझाते हैं। कोटों में कोऊ ही पहचान सकते हैं। अब बताओ कितने बच्चे, (बादल) गरजने और बरसने वाले बनाये हैं। सा० कराते रहो। यादप्यार फर्स्टक्लास बादलों को देना। ओम।